शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:shodhmanthan.anubooks.com*

प्रतिमानाटकम् में नैतिक मूल्य

प्राप्तिः 02.12.2023
स्वीकृतः 24.12.2023

सर्वेश कुमार
शोधार्थी
म०ज्यो०फुले रू०ख० विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेलः *serveshverma824@gmail.com*

97

व्यक्ति समाज में व्यवस्था, समता और पवित्रता बनाये रखने के लिए जिन नियमों का विकास और अनुपालन करता है वे धर्म की सीमा में परिगणन किये जाते हैं। सत्य, अहिंसा, आस्तेय, अपरिग्रह और ब्रहमचर्य व्यक्ति के जीवन के शाश्वत नैतिक मूल्य हैं। इसके अतिरिक्त वृद्धों की सेवा करना, नारियों के प्रति मन से पवित्र भाव रखना और समाज के निचले व्यक्तियों के प्रति उदार भाव तथा कोई असहाय है तो उसके प्रति सहयोग की भावना रखना तथा सहिष्णु रहना, नैतिकता के अन्तर्गत आते है। यही हमारे नैतिक मूल्य भी हैं।

यह सभी गुण वैदिक युग से आज तक समाज को किसी न किसी रूप में एक दूसरे से प्राप्त होते आ रहे है। इनको समाज तक पहुॅचाने का कार्य हमारे विद्वान कवियों ने किया है। क्योंकि कवि समाज का ऐसा व्यक्ति है जो सहृदयों को शीघ्र आकर्शित कर लेता है। कवि अपने काव्य के माध्यम से समाज में एक चेतना रूप भर देता है और हमारे समाज का हित हो जाता है। कवि जिस माध्यम से समाज तक अपने भावों को पहुॅचाता है उसे काव्य कहते हैं। काव्य दो प्रकार के होते हैं

दृश्य–श्रव्यत्व भेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्।[1]
दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम।।

दृश्य काव्यों में नाटकों या रूपक तथा उपरूपकों का ग्रहण होता है। यह जनता द्वारा दृश्य होते हैं इसलिए इनका अभिनय किया जाता है। कहा भी गया है कि **काव्येशु नाटकम् रम्यम्।**[2] कालिदास के शाकुन्तलम् की इस युक्ति के अनुसार काव्य में नाटक रमणीय होता है। इसी आधार पर महाकवि भास के नाटकों में नैतिक मूल्यों के विषय में वर्णन करेगें। महाकवि भास के 13 नाटक हैं जो कि रामायण मूलक, महाभारत मूलक और उद्यनकथा मूलक और कविकल्पित भी हैं। इसी आधार क्रम में प्रतिमानाटक में नैतिक मूल्यों से युक्त राम ऐसे पात्र हैं जिनकी चारित्रिक विशेषताएं नैतिक मूल्यों से भरी पडी हैं। महाकवि भास ने राम के व्यक्तित्व में अनासक्तिमय प्रत्यक्ष कर्मवाद की एक झांकी प्रस्तुत की है और निष्काम भाव से जीवन के कठोर कर्मक्षेत्र में प्रवेश तथा वीरता, त्याग, तपस्या, वलिदान ये सभी नैतिक मूल्य राम के व्यक्तित्व में कूट–कूट कर भरे है। राम ने महाराज दशरथ की वन गमन आज्ञा को एक क्षण विलम्ब न करते हुए स्वीकार किया और वन को चल दिये। वहीं राम के साथ–साथ सीता और लक्ष्मण भी अपना कर्तव्य निभाते हुए राम के साथ वन को चल दिये। इस प्रकार प्रतिमानाटक में कवि ने भ्रातृ प्रेम और कर्तव्य की झांसी प्रस्तुत की है।

तथा पत्नी प्रेम तथा महाराज दशरथ द्वारा कैकई को पूर्व दिये गये वरदान में राम को बनवास और भरत को राज्यभार जो कि एक कठोर निर्णय था फिर भी अपने मूल्यों के प्रति कर्तव्यनिष्ठ महाराज दशरथ ने अपने वचन को पूर्ण किया। भले ही उन्हें अत्यधिक वेदना हुई और

अपने प्राणों को भी त्यागना पड़ा। इन मूल्यों को कवि ने बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया। महाकवि भास ने मुख्य पात्र राम द्वारा एक आदर्श रूप प्रस्तुत किया कैकई द्वारा राम को बनवास मांगा गया तो लक्ष्मण वहुत क्रोधित होते हैं और कहते है कि राज्य नियम के अनुसार राम भैया को मिले। इस प्रकार क्रोधित होते हैं तो मर्यादा युक्त धैर्यशाली, क्षमावान आदि मूल्यों से युक्त प्रभु राम, लक्ष्मण से कहते है कि हे सुमित्रानन्दन! हमारा राज्यच्युत तुम्हें इतना उत्तेजित कर रहा है। पर यह उचित नही है। तुम विवेकशून्य हो गये हो। क्योंकि

भरतो व भवेद् राजा वयं व ननुतत् समम्।[3]
यदि ते अस्ति धनु श्लाघा सा राजा परिपाल्यताम्।।

कि राज्य भरत को मिले या राम को मिले तुम्हारे लिए तो दोनों ही बातें समान हैं। यदि तुम्हे अपने धनुष पर अभिमान है तो जाओ उस राजा भरत की रक्षा करो। इस प्रकार राम को तनिक भी मोह राज्य या ऐश्वर्य से नही है। रामायण में भी राम ने प्रजा के विषय में यह प्रण किया था कि मैं प्रजा का पालन और रक्षा करूंगा। उसके लिए मुझे सबकुछ यहाँ तक कि प्रिय जानकी को भी छोड़ना पड़े तब भी मैं त्याग दूंगा। इस प्रकार नैतिक मूल्य भी हमारे यही कहते है कि मनुष्य को सत्यशील कर्तव्यनिष्ठ आदर्शवादी होना चाहिए। वे सभी नैतिक मूल्य राम के चरित्र में विद्यमान हैं। इन्हीं गुणों के द्वारा हम समाज में एक परिवर्तन, एक क्रान्ति एक ऐसी विचाराधारा जिसके माध्यम से समाज एक उन्नत् शिखर की ओर अग्रसर हो सके। महाकवि भास ने अपने नाटकों में सुन्दर चरित्र चित्रण के द्वारा नैतिक मूल्यों को वहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रत्येक पात्र के द्वारा समाज को उपदेशित किया है। इसी क्रम में प्रतिमानाटकम् में राम की संगिनी अर्थात धर्मपत्नी बहुत ही उदार, आदर्शवादी, पतिव्रता और सामाजिक मर्यादा जैसे नैतिक गुणों से ओतप्रोत हैं। राम के लिए जब महाराज दशरथ ने बनवास की घोषणा की तब उन्हें हृदयाघात जरूर हुआ किन्तु सीता ने धैर्य रखते हुए अपने सभी धर्मो जैसे बहू, भाभी, बेटी, पत्नी आदि सभी का बड़े ही चातुर्यपूर्ण ढंग से निभाया। जब राम वन को जाने लगे तो सीता राम के लिए वस्त्र लाती हैं उस समय राम सीता से उनकी राय पूंछते है।

राम — मैथिलि ! किं व्यवसितम्?[4]
सीता — ननुः सहधर्म चारिणी खल्वहम।
राम — मयैकाकिना किल गन्तव्यम्।
सीता — अतो न खल्वनु गच्छामि।
राम — वने खलु वस्तव्यम्।
सीता — तत् खलु में प्रसादः।
राम — श्रुश्रूशशुरशुश्रशापि च ने निर्वर्तयितव्य?
सीता — एनामुद्दिश्य देवतानां प्राणायः क्रियते।
राम — लक्ष्मण! वार्यतामियम्।

इस प्रकार सीता और राम का संवाद चलता है। राम सीता को वन गमन में साथ चलने के लिए रोकते है और समझाते है कि वन में वहुत कष्ट हैं पर पतिव्रता सीता श्रीराम से साथ में चलने की विनती करती और कहती है कि वहॉ चलकर मैं अपना पत्नीधर्म निभाऊंगी और भैया लक्ष्मण के साथ आपकी सेवा करूंगी। इस पर राम लक्ष्मण से कहते है कि इसे रोको और समझाओ कि वन न जायें तो लक्ष्मण कहते हैं कि हे आर्य

लक्ष्मण – आर्य! नोत्सहे श्लाघनीये काले वारयितुमत्र भवतीम्। कुतः
आर्य! इस शुभ अवसर पर इन्हें रोकने का साहस नही होता। क्योंकि

अनुचरित शशाङ्.क राहु दोशेऽपि तारा [5]
पतति च वनवृक्षे याति भूमिं लताच।
त्यजति न च करेणुः पंकलग्नं गजेन्द्रं।
ब्रजतु चरतु धर्मं भर्तृनाया हिनार्यः

लक्ष्मण कहते है कि राहु से ग्रसित होने पर भी रोहिणी चन्द्रमा का साथ देती है। वृक्ष के धराशायी होने पर लताएं उससे लिपटी ही रहती है। गजराज के कीचड़ में फंस जाने पर हथिनियाँ उसका साथ नही छोड़ती हैं। अतः इन्हें भी वन जाने दें। स्त्रियों के लिए पति ही सर्वस्व है। इस प्रकार हमारे समाज में स्त्रियों के नैतिक मूल्यों के विशय में वहुत ही मार्मिक ढंग से बताया गया कि यदि समाज में सभी स्त्रियाँ सीता मैया की तरह हो जायें तो समाज में व्याप्त कुंठित मानसिकताएं दूर हो जायेगीं। परिवारों में कलह की कोई जगह नही बचेगी।

महाकवि भास ने प्रतिमानाटकम् में सेवाभाव सीता के साथ–साथ लक्ष्मण में भी कूट–कूट कर भरा है। लक्ष्मण त्याग और तपस्या के आदर्श है। राम के वन गमन के समय लक्ष्मण राम से सीता को साथ रहने के लिए कहते हैं तथा राम के मना करने पर भी सीता के लिए राम के साथ जाने को उचित ठहराते हैं किन्तु जब वन गमन के समय राम वल्कल वस्त्र अकेले पहनने लगते हैं तो वे अपने बड़े भाई से कहते है कि आज तक तो आप वस्त्राभूषण माल्या प्रभषति सारी उपभोग वस्तुओं में मुझे आधा हिस्सा देते आये है फिर भला इस बल्कल में इतना लोभ क्यों। इसे क्यों अकेले पहन रहे हैं।

निर्योगाद् भूषणन्माल्यात् सर्वेभ्योऽर्थं प्रदाय में। [6]
चिरमेकाकिना बद्धं चीरे खल्वसि मत्सरी।।

इस प्रकार लक्ष्मण के राम से कहने पर राम भावविभोर होकर सीता से कहने लगे कि सीते इस लक्ष्मण को रोकें तो सीता लक्ष्मण से कहती है कि रहने दो। साथ चलने को चतुर लक्ष्मण सीता से कहते हैं कि

गुरों में पदशूश्रुशां त्वमेका कर्तृमिच्छसि? [7]
तवैव दक्षिणः पदौमम सव्यो भविष्यति।।

मेरे पूज्य राम की चरण सेवा आप अकेली ही करना चाहती हैं। अच्छा तो दायें पैर की सेवा आप करें और वाये पैर की ही सेवा मैं करूंगा। लक्ष्मण का यह कहना बहुत ही त्याग और तप तथा सेवाभाव को दर्शाता है। वे अपनी बात सीता के साथ इस प्रकार रखते है कि सीता निरूत्तर होकर चुप हो जाती है। तब राम लक्ष्मण के हाथों बल्कल वस्त्र दे देते हैं और उन वस्त्रों की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि यह वस्त्र वन में कवच का काम करेगें। इन्हें धारण कर लो। इस प्रकार वन गमन बेला में शोकयुक्त होते हुए भी राम सीता और लक्ष्मण पिता की आज्ञा का पालन हंसते हुए करते हैं। इधर महाराज दशरथ कैकयी को वरदान तो दे चुके कि राम को वनवास भरत को राजगद्दी लेकिन बहुत दुःखी थे। वे बार–बार मंत्री सुमन्त्र से राम, सीता और लक्ष्मण के विषय में पूछ रहे थे। इस प्रकार जब वे सभी से मिले तो उनकी स्थिति वहुत ही करूणायुक्त वात्सल्ययुक्त भावविभोर करने वाली थी। वे सभी बेटों से प्रेम करते थे किन्तु बड़े बेटे राम से अधिक लगाव रखते थे। महाराज दशरथ जब शैया पर लेटे थे तो महारानी कौशल्या से कहते है कि हे कौशल्ये –

अंगं मे स्पष्शं कौशल्ये! नत्वां पश्यामि चक्षुशा।[8]
रामं प्रति गता बुद्धिरद्यापि न निवर्तते।।

मेरी देह का स्पर्श करो मैं आँखों से तुम्हे देख नही पा रहा हूँ। राम की ओर ये मेरा मन अब तक लौट नही रहा है। इस प्रकार राम लक्ष्मण और सीता के चले जाने पर वहुत दुःखी थे और मन ही मन स्तब्ध थे। यहाँ पुत्र प्रेम साक्षात् देख सकते हैं। वे बड़े बेटे को अधिक प्रेम करते थे और हमारे समाज में भी देखा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उत्तराधिकारी और कार्यो का भार बड़े बेटे को ही सौंपता है। इसी सामाजिक प्रथा का अनुकरण करते हुए महाराज दशरथ भी समस्त राज्य भार को बड़े बेटे राम को सौंपना और युवराज बनाना चाहते थे। किन्तु कैकयी के वचनों में बंधकर चाहकर भी कुछ नही कर पा रहे थे और विचार कर रहे कि

राज्ये त्वामभिशिच्य सन्नरपतेर्लभत् कृतार्थाः प्रजाः[9]
कृत्वा, त्वत्सहजान् समानविभवान् कुर्वात्मनः सन्ततम्।
इत्यादिश्य च ते, तपोवनमितो गन्तव्यामित्वेतया।
कैकेय्या हि तदन्यथा कष्तमद्ये निःशेशमेकक्षणे।।

बेटा राम तुमको राजा बनाकर प्रजा को अच्छे राजा के लाभ से कृतार्थ कर और तुम्हे यह कहकर कि अपने भाइयों को सदा अपनी तरह सम्पन्न बनाये रखना। मैं वृद्धावस्था में तपोवन चला जाऊंगा। किन्तु हाय! मेरा यह सब सोचा हुआ कैकेयी ने क्षण भर में पलट डाला। मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है। महाराज दशरथ क्या सोचे थे और क्या हो गया। जिस प्रकार राजा दशरथ राम को अधिक प्रेम करते थे उसी प्रकार उनके सभी बेटे अपने बड़े भाई राम से प्रेम और आदर करते थे। ननिहाल से लौटे भरत को जब पता चला कि राम को वनवास हो गया तो वे अपनी माता कैकई को बुरा भला कहते हैं और अपने बड़े भाई को वापस लौटाने के लिए वन को मंत्री सुमंत्र के साथ निकल पड़ते हैं। वन में जब वे राम के पास पहुँचे तो भरत राम से कहते है कि एक वरदान चाहता हूँ तो राम कहते है कि बोलो वत्स क्या चाहते हैं। भरत कहते है कि

पादोपभुक्ते तब पादुके म एते प्रयच्छ प्रणताय मूर्ध्ना।[10]
यावद्भवानेश्यति कार्य सिद्धिं तावद्भविश्याम्यनयोर्विधेयः।।

हे आर्य अपने चरणों में नत इस दास को अपना खड़ाऊँ दे दें मैं तब तक इन्हीं पादुकाओं का दास रहकर आपका राज्य भार तब तक सम्भालूंगा जब तक आप अपना कार्य सिद्ध कर घर लौटेगें। भ्राता भरत की यह बातें सुनकर राम भावविभोर हो गये और ऑसुओं को रोक नही सके और बोले कि भरत आज तुमने मुझे बहुत प्रसन्न कर दिया और मैने बहुत दिनों तक जितना यश संचित किया था तुमने उतना यश अतिअल्प समय में अर्जित कर लिया है।

सुचिरेणापि कालेन यशः किंचिन्मयार्जितम्।[11]
अचिरेणैव कालेन भरतेनाद्य संचितम्।।

राम ने इस प्रकार के वचन के प्रति कहे तो भरत का मन वहुत प्रसन्न हुआ और वे अपने eu esa l e>krs gSfd vc eSaHkS k jke dh [kMkÅ Wdks fl gklu ij j[kdj vkjS mudsvkJ; esa jgdj eSajkT; Hkkj l EHkky wxk vkjS v; ks; kokfl ; ksa dk i ksa ik= cuwxkA D; ksfd vc rd eSa v; ks; kokfl ; ksa dh ut jksa esa fxj k gqvk FkkA bl i zdkj egkd fo Hkkl usv i us: i d ksa esa i k= ksa d ks ekuoh; xq.kksa r Fkk ufSrd xq.kksa l si fj i w.kZ fd ; k gSA Hkkl usv i usd foRo esa i kjS k.kd i k= ksa d ks

वास्तविकता मनोवैज्ञानिकता और मार्मिकता के साथ चित्रण कर उन्हें नवीन बना दिया। भास के सभी रूपक प्रायः संघर्ष व द्वन्द प्रधान है। यह संघर्ष दोनों ही प्रकार का है। घटना व्यापार सम्बन्धी तथा पात्रों के मानसिक स्थिति सम्बन्धी। इन्होने पौराणिक सत्यता पर अपनी कल्पना का रंग चढ़ाकर इतिहास पुराण के रूखे चित्रों को काव्यमय बना दिया। किन्तु उस कल्पना से पौराणिक तथ्यों को खण्डित नही होने दिया। यह भास की मौलिक विशेषता भी है। प्रतिमानाटकम् में भी महाकवि ने नायक नायिका से लेकर अन्य पात्रों के व्यक्तित्व में अनासक्तिमय प्रत्यक्ष कर्मवाद की मंजुल झांकी प्रस्तुत की है। प्रतिमानाटकम् में राम को कवि ने आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया। अन्य पात्रों में सीता लक्ष्मण तथा भरत को इस रूप में प्रस्तुत किया कि यह पात्र समाज में एक आदर्श प्रस्तुत कर सकें और समाज के लोगों को एक संदेश दे कि किस प्रकार एक भाई, भाई के प्रति कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, त्यागी है। महाराजा दशरथ ने भी वचनवद्ध होकर कितना बड़ा त्याग किया। जिस बड़े बेटे को देखकर जीते थे उसे अपनी पत्नी के कारण बनवास देकर भरत को राज्य सौंप दिया किन्तु भरत का भी बहुत बडा त्याग है। जो दिये गये पद को न स्वीकार कर अपने भाई को ही स्वामी स्वीकारता है यह बहुत ही बडा त्याग है। पत्नी सीता को देखो तो त्याग की देवी तथा उस लक्ष्मण का त्याग अतुलनीय है। आज भी हमारे समाज में इनके उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं। इन्हीं प्रसंगों को सुनकर देखकर कितने ही गलत लोग हैं जिन्होने अपना बुराई का रास्ता त्यागकर अच्छाई के रास्ते को अपनाया और अपना जीवन सुधारा। प्रतिमानाटकम् के माध्यम से कवि ने समाज को त्याग की भावना रखना और लोभ लालच ईर्ष्या को छोड़ने पर संदेश दिया। हमारे नैतिक मूल्य भी समाज को एकजुट रहकर मिल जुलकर कार्य करने तथा एक दूसरे का सहयोग और परस्पर प्रेम की भावना को बनाये रखना सिखाते है जिससे देश और समाज आदि का विकास हो सके और समाज में अच्छे गुणों का संचार हो सके।

संदर्भ

1. सिंह, डा0 सत्यव्रत. साहित्य दर्पण आचार्य विश्वनाथ टीका. पृष्ठ **359.**
2. अभिज्ञान शाकुन्तलम्. कविवर कालिदास. टीका कपिल देव द्विवेदी।
3. मिश्रा, आचार्य जगदीश चन्द्र. प्रतिमानाटकम् महाकवि भास, टीका. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशनः वाराणसी. पृष्ठ **46.** श्लोक संख्या 20.
4. वही. पृष्ठ **50.** श्लोक संख्या 50.
5. वही. पृष्ठ **51.** श्लोक संख्या 25.
6. वही. पृष्ठ **53.** श्लोक संख्या 26.
7. वही. पृष्ठ **53.** श्लोक संख्या 27.
8. वही. पृष्ठ **79.** श्लोक संख्या 18.
9. वही. पृष्ठ **79.** श्लोक संख्या 19.
10. वही. पृष्ठ **146.** श्लोक संख्या 25.
11. वही. पृष्ठ **146.** श्लोक संख्या 126.
12. इन्टरनेट विकिपीडिया आदि।